International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अकबर का उदार धार्मिक दृष्टिकोण

उपेन्द्र कुमार कर्मशील

शोध छात्र

बी0आर0ए0बिहार विश्वविद्यालय

अकबर के शासन के प्रारम्भ होने के पूर्व व्यापक धार्मिक आंदोलन, नवीन धार्मिक जागृति और चेतना तथा हिन्दू और सुफी संतो के असाधारण आध्यात्मवाद ने उदारता, सहिष्णुता, प्रेम और सदभावना का वातावरण निर्मित कर दिया था। इस वातावरण में ईश्वर की एकता और वर्ग विनाश पर बल दिया तथा विभिन्न धर्मो के समन्वय को उससे प्रोत्साहित किया था। इससे अकबर के उदार धार्मिक विचारों और वनीन प्रयोगो के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया। धीरे–धीरे इस नवीन वातावरण के प्रभाव से उसका हृदय सभी धर्मो और वर्गो के प्रति उदार और सहिष्णु होता गया जो उस युग की प्रमुख मांग थी।

इबादत खाने में धार्मिक विमर्श व चर्चाओं से अकबर को यह अनुभव हुआ कि, सत्य किसी एक धर्म में नही बल्कि सभी धर्मो ने इसके तत्व विद्यमान है। सत्य ही सभी धर्मो में महान एवं श्रेष्ठ है। इस क्रम में बादशाह ने पारसी धर्म की ओर आकृष्ट होकर उसमें छिपे सत्य की ओर अग्रसर हुआ। पारसी धर्म ईरान के जरथुस्त का था। अकबर की इच्छा पारसी धर्म को समझने की हुई। इस क्रम में अकबर को ज्ञान हुआ कि गुजरात के सूरत के सन्निकट कुछ पारसी लोग रहते हैं। जहाँ पर बादशाह का 19 वां परगना नवसारी था जिसका क्षेत्रफल 17353 बीघा था। वहाँ पारसियों के धर्मगुरू राणा जशंग थे जो पवित्र तथा विद्वान थे। उनके पुत्र महयर था। कालान्तर में वह महयर परिस्थितियों का धर्मगुरू गन गया। बादशाह अकबर सन् 1572 से 1543 ई0 में गुजरात विजय के बाद वहाँ गया था और पारसी धर्म गुरू महयर से मिला था। गुजरात का नवसारी पारसी धर्म का केंद्र बिंदु था। अकबर उस समय कांकरखड़ी में सैन्य केंद्र स्थापित करने के क्रम में पारसी धर्म औश्र उसके धर्म गुरू मेहर के सम्बन्ध में जान पाया। पारसी धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थाल उस काल–खण्ड में नवसारी ही था और मेहर जी पारसियें के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सर्वमान्य धर्मगुरू थे। जिनसे अकबर ने भेंट की थी। सत्य की खोज का भूखा अकबर अपने सूबेदार सहाबुद्दीन खां को वहां भेजा और कहा कि इस धर्म के महान विद्वानों को फतेहपुर सिकरी बुलाओ, जो अकबर को पारसी धर्म के मूलभूत तत्वों की विवेचना कर सके। फलतः सन् 1578 से 1579 ई0 में अपने पुत्र कैकूवाद के साथ मेहर जी राणा फतेहपुर गए औश्र इबादतखाने में स्वागत के सङ्गथ बादशाह से परिचय कराया गया। तदोपरान्त इबादतखाने के धार्मिक चर्चा में भी सम्मिलित हुए। '' मेहर जी ने पारसी धर्म के गुप्त आचरणों में दीक्षित किया औरर उ सके विशेष शब्दों, रीति–रिवाजों, उत्सवों और सिद्धान्तों से अवगत कराया। उसने अकबर को पारसी धर्म के प्रवर्त्तक जोरास्टर के विलक्षण चमत्कारों के विषय में सूर्य, अग्नि, चन्द्र के प्रति श्रद्धा और भक्ति, एक ईश्वर की पुजा, पवित्र, सत्य, सुद्रेह का पहिनना, कुश्ती नौरोज–ए–खास और नौरोजे आम के विषय में भी बतलाया। अकबर मेहर जी राणा के पारसी धर्म के प्रतिपादन, उनके विचारों और जीवन की पवित्रता से इनता अधिक प्रभावित हुआ कि अकबर ने मेहर जी को नवसारी के समीप परचोल गांव में रखी 200 बीघा जमीन जीवन निर्वाह के लिए दे दिया। पुरस्कार में प्राप्त यह जमीन घेलखड़ी के नाम से प्रसिद्ध है। बादशाह के द्वारा पुरस्कृत होने पर और भूमि दासन मिलने पर मेहर जी राणा की ख्याति काफी बढ़ गई और वे पारसी धर्म के मुख्य पुजारी बन गए। उनकी मृत्यु के पश्चात कैकूवाद बादशाह से फिर मिलने गया तो अकबर ने पुनः 300 बीघा जमीन का फरमान जारी कर दे दिया।

वस्तुतः बादशाह मेहर जी राणा के सत्संग से काफी प्रभावित हुआ और उसने इस धर्म के कतिपय मूलभूत तत्वों को अपने जीवन में ग्रहण किया। इस क्रम में अकबर ने पारसी धर्म में सूर्य पूजा और अग्नि दाह को राज महल मे स्थान दिया। वह स्वयं पारसी धर्म के प्रभाव में आकर सूय्र को साष्टांग नमन प्रारम्भ कर दिया। बादशाह हाथ में माला लेकर सूर्य के 1001 नाम का जाप स्वयं करने लगा। इतना ही नही अपितु सूर्य के सहस्त्र नाम पर मुल्ला शेरी ने हजार शुआ पुस्तक की रचना कर बादशाह को समर्पित किया। जिसमें सूर्य की पूजा के सहस्त्रनाम थे। इस धर्मगुरू का प्रभाव अकबर का काफी पड़ा और उसने अबुल फजल के संरक्षण में राजमहल में 24 घंटा

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अग्नि दाह का आदेश दिया। वह अग्नि में चंदन रख कर पूजा करता था और अग्नि को ईश्वर का प्रतीक मानता था। प्रतिदिन शाम में राजमहल में दीप जलाया जाता था और उस काल में अकबर खड़े होकर उसे नमन करता था। अकबर का नवरत्नों में सर्वाधिक लोकप्रिय रत्न बीरबल अग्नि और सूर्य की पूजा करता था और हरम में हिन्दु महिलाओं के प्रभाव में आकर हवन कार्य भी उसने प्रारंभ कर दिया। यों तो सूर्य और अग्नि की पूजा आदि काल से हिन्दु करते आ रहे हैं। जो पारसी धर्म में भी पाया जाता है। अतः पारसी अथवा हरम की हिन्दु महिलाऐं अथवा बीरबल के प्रभाव में अकबर ने अग्नि तथा सूर्य की उपासना प्रारम्भ कर दिया जो उसके धार्मिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। अकबर ने पारसियों की पवित्र सुद्रेह या सदरी (पवित्र कुर्त्ता) और कुश्ती (कमर बन्द) भी धारण कर लिया था।''

अकबर के राज दरबार में फारसी भाषा का प्रचलन ज्यादा था क्योंकि उसकी माँ की भाषा फारसी थी और फारसी भाषा का साहित्य काफी विशाल और विस्तृत था। ''फारसी साहित्य में इस्लाम के विरोधी भाव बीज रूप में मौजूद थे। ईरानियों ने इस्लाम की तलवार के सामने सिर झुकाया अपने जरथुस्ती मजहब को भी कुर्बान कर दिया पर अपनी कुछ संस्कृति के प्रेम को वह कभी छोड़ नहीं सके। इसी को प्रकट करते फिरदौसी ने शाहनामा में प्राचीन ईरान की महिमा बढ़ा चढ़ा कर गायी और उजड् असभ्य अरबों को दिल खोलकर कोसा। अकबर ने इसे अपने मन की बात समझी। वह फिरदौसी के निम्न शेर को बार–बार पढ़वाकर सुनते हुए मजा लेता था–

ज–शीरे शुतुर–खुर्दन व सूसमान,

अरबरा बजाय रसीदरत कार।

कि तख्ते कियाँ स कुनद आरजू,

तफू बरतू ये चरर्वे–गर्दा तफू।

ऊँट के दूध और सुसमार खाने वाले अरबों को, तुने प्रभु बना दिया कि वह ईरान के शाहों के तख्त की कामना करें। ओ घुमने वाले आसमान तेरे ऊपर थू है, थू है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अकबर शाहनामा से काफी प्रभावित था और उसने भारत के शाहनामा अर्थात महाभारत का अनुवाद करवाना चाहा जिसके जिलए उसने नकीब खां को इसे फारसी में अनुवार का हुक्म दिया। फिर समय की कमी में उसने बदायूंनी को आदेश दिया कि नकीब खां के साथ मिलकर अनुवाद करो। तीन–चार माह मे ंकुल 18 पर्वो में मात्र 2 पर्व का फारसी अनुवाद हो सका। इस पर झल्लाकर अकबर ने बदायूंनी को हरामखोर तक कह दिया। फिर उनसे नकीब खां को कहा कि इसे अनुवाद कर दो पर उससे भी संभव नहीं हो सका। तब बादशाह ने अपने राज कवि फैजी को गद्य या पद में अनुवाद का हुकुम दिया। फैजी भी दो पर्व तक ही अनुवाद कर सका। जबकि वह राज कवि और आपने काल का अद्वितीय विद्वान था। इस अनूदित महाभारत का नाम शाहनामा की तर्ज पर रजमनामा रखा गया। इस रजमनामा को चित्रों से सजाकर सुन्दर लिखावट में लिखवा कर अमीरों को आदेश किया कि पुण्य प्राप्ति के लिए इसे वितरित किया जाए। इस कार्य की सम्पन्नता के लिए बादशाह ने बदायूंनी को 10,000 हजार तंका भी दिया।

पारसी धर्म का प्रभाव अकबर पर काफी पड़ा और राजमहल से लेकर अपने दैनिक जीवन में उसकी कथित महत्वपूर्ण तथ्यों को अपने में आत्मसात कर लिया। इसमें 14 जो उसके महत्वपूर्ण त्यौहार थे उसे तवज्जो दिया। पारसी त्योंहार, रीति–रिवाजों को अपनाने का पर्दे के पीछे निम्नांकित मूलभूत कारण थे। जिसे बी0एन0लुनिया ने अपनी पुस्तक अकबर महान के पृष्ठ 228 पर अंकित किया है–

1. अकबर की माता हमीदा बानो बेगम फारसी (इरानी) थी। फलतः फारस वासियों के प्रति अकबर का झुकाव होना स्वाभाविक था।

2. अकबर का भारत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था जो उसके परिवार ने सदैव बनाए रखा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

3. फारस के अनेक विद्वान अधिकारी और सेनानायक अकबर के प्रशासन और दरबार में थे। मुगलों (उजबेगों और चड़ाताई) की अपेक्षा इरानी अधिकारियेां के प्रति प्रकट रूप से उसकी अभिरूचि थी। इनके संतोष सहानुभूति व समर्थन के लिए अकबर ने फारसी रस्मों और त्योहारों को अपनाया तथा ईरान के धर्म दर्शन के प्रति अनुग्रह पूर्ण दृष्टि रखी।

4. भारत में रहने वाले पारसी और फारस के रहने वाले इरानियों में त्यौहारों और रीति–रस्मों की समानता थी। पारसियों के प्रमुख त्योंहारो और रस्मों को अपनाने से अप्रत्यक्ष रूप से वह इरान के ही रस्म और त्योहार अपनाता रहा।

5. सन् 1579 ई0 में अकबर द्वारा मजहर की घोषणा कर देने से अकबर के दरबार के इरानियों के मन में असंतोष बढ़ गया था क्योंकि वे समझने लगे थे कि मजहर की घोषणा से अकबर ने इरान के धार्मिक प्रभुत्व पर आघात किया है। इरानियेां की इस धारणा के निराकरण हेतु अकबर ने फारस के त्योंहारों को अपना लिया था।

पारसी धर्म के प्रभाव में अकबर ने काफी काम किया। उसके सिद्धान्तों के अनुपालन के अतिरिक्त उस पर फारसी भाषा के विकास की नशा चढ़ी थी। अब उसने फारसी भाषा के शब्द कोष को तैयार करवाने का प्रयास किया। इस क्रम में उसने इरान के कोषकार जमालुद्दीन को बुलाया। अकबर कि दिली इच्छा थी कि फारसी के नए शब्दकोष में दारी एवं पहलवी के साथ साथ उसके मुहावरें का भी समावेश हो। इस प्रकार फारसी का यह नवीन शब्दकोष तो तैयार हुआ किंतु अकबर तब तक दुनिया को अलविदा कर चुका था। फलतः उसकी मृत्यु के लगभग 3 वर्षो के पश्चात् फरहंग जहाँगीरी नाम से वह फारसी का शब्दकोष प्रकाश में आया।

अब तक पारसी धर्म के मर्म को अकबर पूर्णतः आत्मसात नहीं कर पाया था। फलतः उसने फिर अपनी जिज्ञासा की पूत्ति के लिए किरमान को बुलाकर पारसी धर्म के मर्म को बार–बार समझने का प्रयास किया। कतिपय पारसी के विदेशाी विद्वानों ने पत्रों के माध्यम

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

से भी पारसी धर्म के मर्म को अकबर तक पहुँचाया। इस प्रकार अकबर पारसी धर्म को अच्छी तरह समझ गया था की इसमें सत्यता क्या है ? कतिपय विद्वानों का तर्क है कि बादशाह पारसी धर्म को स्वयं अपना लिया था और इन धर्मगुरूओं का काफी प्रभाव अकबर पर पड़ा था। बदायूंनी और अबुल फजल का यह कथन सत्य है कि अकबर ने सन् 1581 से 1582 ई0 में पारसी धार्मिक सिद्धान्तों और रस्मों को दरबार मे रहने वाले पारसियेां प्रभाव के कारण ग्रहण कर लिया था। परन्तु पारसी धर्म के सिद्धान्तों को अपना लेने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि अकबर पूर्ण रूपेण उनके धर्म में दीक्षित हो गया था। सत्यता यह है कि दूसरे धर्म के समान अकबर ने पारसी धर्म के सिद्धान्तों और परम्पराओं का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। धार्मिक समन्वय और सम्मिश्रण का वातावरण बनाने के लिए अकबर ने ऐसा किया था।

स्मिथ लिखता है – ''अकबर के अजीबोगरीब व्यवहार द्वारा अनेको धर्मो की जाँच के फलस्वरूप उसको सबसे अधिक संतोष पारसियों के धर्म से हुआ। सन् 1578–79 ई0 में नवसारी निवासी दस्तुर मेहरजी राणा ने अकबर को इस धर्म के रहस्य बताते थे। उनकी प्रथम भेंट सन् 1573 ई0 में गुजरात में युद्ध के समय खांकरा सारी में हुई थी। सन् 1591 मे उस प्रसिद्ध दस्तुर की मृत्यु हो जाने पर उनका पुत्र अकबर के दरबार में रहने लगा। उसको 200 बीघा भूमि जागीर में मिली। जिसमें 100 बीघा भूमि बाद में बढ़ा दी गई। सन् 1580 के बाद अकबर सब लोगो के समक्ष सूर्य और अग्नि को साष्टांग दण्डवत किया करता था। सायं काल को जब दीपक जलाए जाते थे आदर पूर्वक सारा दरबार खड़ा हो जाता था। बदायूंनी लिखता है कि सम्राट ने यह आदेश दे दिया था कि दफनाते समय पार्थिव शरीर का सिर पूर्व की ओर रखा जाय। सम्राट ने इसी प्रकार सोना भी शुरू कर दिया था।

सर्वधर्म सम्भाव की मूल भावना को आत्मसात कर अकबर ने सुलह–ए–कूल की नीति अपनाई एवं दीन–ए–इलाही की अवधारणा में पारसी परम्परा के तत्वों को भी आत्मसात किया गया। अकबर की उच्चस्तरीय पात्रता इस तथ्य में निहित है कि उसने परम्परागत धार्मिक संर्कीण दायरे से इतर साम्प्रदायिक सौहाद्रता व सदभाव को प्राथमिकता दी।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 9 -Issue 1- January-2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ –सूची

1. बी0एन0 लुनिया–अकबर महान पृष्ठ – 194
2. दस्तुर एरच जी–महीचरनामा पृष्ठ – 64–65
3. पाद टिप्पणी बी0एन0लुनिया पृष्ठ – 225
4. भी0ए0 स्मिथ–अकबर द ग्रेट मुगल पृष्ठ – 162
5. राहुल सांकृत्यायन– अकबर पृष्ठ – 248
6. बी0एन0 लुनिया–अकबर महान पृष्ठ – 228
7. बी0एन0 लुनिया–अकबर महान पृष्ठ – 229
8. एस0आर0शर्मा– भारत में मुगल साम्राज्य पृष्ठ – 212–213